पुराणों के कृष्ण

लेखक :

डा0 श्रीराम आर्य

(खण्डन-मण्डनात्मक साहित्य के प्रणेता)

अमर स्वामी प्रकाशन विभाग
१०५८, विवेकानन्द नगर, गाज़ियाबाद-२०१००१
(उत्तर प्रदेश)

तृतीय संस्करण नवम्बर-२००२ ई०) (मूल्य- पाँच रूपये

।।ओ३म्।।

आद्य निवेदन

इस पुस्तक को लिखने में हमारी कोई दिलचस्पी नहीं थी। पर जब मि० माधवाचार्य जी की पुस्तक हमारे सामने आई और जनता में उसका उन्होंने प्रचार किया , तो यह देखकर कि किस प्रकार इस पौराणिक पंडित ने हमारे सीधे-साधे सत्य विज्ञापन पर झूठ का परदा डालकर हमको व ऋषि दयानन्द को गालियां दी हैं और जनता को भ्रम में डाला है, हमें इच्छा न होते हुए भी पुराणों के आधार पर उनके पाखण्ड का भण्डाफोड़ करना पड़ा है महानात्मा श्रीकृष्ण जी महाराज सर्वथा निष्कंलक थे उनकी एक पत्नी रुक्मिणी थी व एक पुत्र प्रद्युम्न था। हम आर्य समाजी लोग उनको अपना व भारतीय राष्ट्र का महान आदर्श पूर्वज मानते हैं। उनका जन्म यादव कुल में हुआ था। बाल्यावस्था में गौ चराने का कार्य उन्होंने किया था। आज भी ग्रामों में लड़के लड़किया ''ग्वाले व ग्वालिन'' साथ-साथ गौ चराने का काम करते हैं पुराण बनाने वाले रसिक धूर्तो * ने कृष्ण को श्रृंगार रस का देवता ''नायक'' व उन ग्वालिन छोकरियों को श्रृंगार रस की नायिका ''गोपियां'' बना कर पुराणों में गंदी मिथ्या कथायें घढ़कर लिख मारी हैं। कृष्ण का गोपियों से व्यभिचार रासलीला, कुब्जा समागम, एक फर्जी प्रेमिका राधा से गंदा प्रेम इसी प्रकार की झूठी कहानियां हैं हमारा विश्वास है कि राधा नाम की कोई औरत कृष्ण के समय में नही हुई थी। कामुक हृदय लोगों ने बहुत समय बाद एक सुंदर नर्तकी राधा की कल्पना की और कृष्ण

---

* देवी भागवत स्कन्ध ५ अध्याय १९ में पुराणकारों को 'धूर्त' बताया गया है।

के साथ उसके प्रेम की कथा बना ली गई इसलिए बाद के बने पुराणों में राधा का वर्णन मिलता है जो भागवत में नहीं है। "न नौ मन तेल होय न राधा नाचे" यह प्रसिद्ध लोकोक्ति इस बात का समर्थन करती है कि शायद कभी कोई राधा नाम की प्रसिद्ध नर्तकी "डांसर" रही होगी। उसके नाच में इतनी भीड़ इकट्ठी होती होगी कि मशालों में एक रात में मजलिस में रोशनी करने हेतु ९ मन तेल जल जाता होगा। जैसा कि आजकल कई सिनेमा नर्तकी मशहूर हो रही हैं राधा का नाम महात्मा कृष्ण के साथ जोड़ना उनको व्यभिचारी बताना है। यह पौराणिकों की घोर अज्ञानता है इस पुस्तक को पढ़कर पाठक यह देखेंगे कि पुराणों में निष्कंलक कृष्ण को कैसे-२ झूठे लांछन लगाए हैं। वे कंलक जब तक पुराणों का बहिष्कार नहीं किया जावेगा तब तक नहीं मिट सकते हैं अत: हमारा निवेदन है कि हमारी हिन्दु जाति पुराणों का पढ़ना सुनना त्यागकर वैदिक साहित्य पढ़ना सीखें और अपने पूर्वजों के निष्कंलक चरित्रों एवं उनकी मान मर्यादा की रक्षा करने में अपना गौरव समझें। पौराणिक पंडितों से हमें कहना है कि वे समय के परिवर्तन को देखें और अपने विचारों में परिवर्तन करें। इन पुराणों के कारण आर्य धर्म की बड़ी बरबादी हुई है इनका पाखंड अब ज्यादा दिन चलना नहीं है। इस पुस्तक को पढ़कर यह देखें कि भागवतादि पुराण कितने भ्रष्ट ग्रन्थ हैं । अत: उनका किसी भी रुप में प्रचार न करने का व्रत धारण करें।

कासगंज　　　　　　　　निवेदक-

ता० १-१-५६　　　　"डा० श्रीराम आर्य"

।।ओ३म्।।

महामूर्ख पौराणिक पंड़ित की गाली सभ्यता के चन्द नमूने-

"निष्कलंक कृष्ण" पुस्तक में

पृष्ठ २- कासगंजी दयानन्दी ने, पृष्ठ ४- निर्लज्ज दयानन्दी तो रांड़ 'निपूती' कहे बिना शांत होने वाले जन्तु नहीं हैं। पृष्ठ ४- वेद शास्त्रानभिज्ञ मूलचंद को सूझ सकता है। पृष्ठ ४- फूटी आंखों देखने का अवसर मिला होता तो...तो जन्मजात अंधता कथमपि दूर हो पाती। पृष्ठ ७- नियोग से पैदा हुए दुष्ट हृदय दयानन्दियों के कुत्सित मस्तक में नहीं समा सकते। पृष्ठ ८- दयानन्दियों को निराकार बाबा भी उनकी कन्या पाठशालाओं में उनसे नित्य संभोग करता होगा। ऐ नियोगियों ! यदि अपने किए अनर्थ के परिणाम पर कुछ भी लज्जा हो तो वैतरणी में डूब मरो। पृष्ठ १२- अरे संस्कृतानिभिज्ञमूढ़ों ! कुछ शर्म हो तो कर्मनाशा में डूब मरो। पृष्ठ १४- कासगंजी अन्धे महाशय को। पृष्ठ २१- दयानन्द ने मनघढ़ंत झूठ कथायें सत्यार्थ प्रकाश के १२वें समुल्लास में लिखकर सदा के लिए अपनी महा मूर्खता का अमर रिकार्ड संग्रह कर दिया।

नोट - इस प्रकार की असभ्यता पूर्ण भाषा में पुस्तक लिखकर मूर्ख शिरोमणि माधवाचार्य ने हमको व आर्य समाज के प्रर्वतक को अपशब्दों में संबोधित किया है।

अत: विवश: होकर हमें भी प्रत्युत्तर में इस पुस्तक में कटु भाषा का विपक्षी के लिए प्रयोग करना पड़ा है ! पाठक वृन्द क्षमा करें !!

'लेखक'

कृष्ण के उज्जवल चरित्र पर पुराणों के गन्दे आक्षेप?

प्राय: कुछ साल हुए हमने "वर्तमान कीर्तन प्रणाली दूषित है" तथा "महानात्मा श्रीकृष्ण जी के नाम के साथ राधा का नाम जोड़ना गलत है", इन विषयों पर एक विज्ञापन प्रकाशित किया था। इतने लम्बे समय तक सोच विचार एवं तैयारी करने के बाद दिल्ली के प्रसिद्ध गाली गलौज शास्त्री पौराणिक माधवाचार्य ने 'निष्कलंक कृष्ण' नाम से उसका उत्तराभास प्रकाशित किया है। जवाब तो उससे बन नहीं पड़ा है, कोरी गालियों की भरमार उसके लेख में की गई है। साथ ही जनता को भ्रम में डालने के लिए अपने मिथ्या पांडित्य के आधार पर विषय को टालने की कोशिश की गई है। हम माधवाचार्य की गालियों का उत्तर उसी रुप में देना उचित नहीं समझते हैं। "पर शठे शाठयम्...." के आधार पर उनका गर्व मर्दन अवश्य करेंगे पाठक इसके लिए हमें क्षमा करें।

हम आर्य समाजी श्रीकृष्ण महाराज को महान् विद्वान सदाचारी, कुशल राजनीतिज्ञ एवं सर्वथा निष्कलंक मानते हैं। ऐसा महापुरुष कभी व्यभिचारी, परस्त्रीगामी अथवा कुकर्मी नहीं हो सकता है पर सनातन धर्म के पुराणों में श्रीकृष्ण जी महाराज के पवित्र जीवन पर अंसख्य गंदे एवं मिथ्या लांछन लगाए गऐ हैं। भागवत ब्रह्मवैवर्त आदि पुराण ऐसे ही गंदे लांछनों से युक्त मिथ्या कहानियों से भरे पड़े हैं, जिन्हें देखकर प्रत्येक भारतीय सभ्यताभिमानी का सर लज्जा से झुक जाता है और विधर्मी हिन्दु जाति को संसार में बदनाम करते है। हमने लिखा था कि ऐसे गलत पुराणदिकों को धर्म ग्रन्थ नहीं मानना चाहिए और उनका प्रकाशन बंद कर देना चाहिए। पर हमारा विचार हमारे विपक्षियों को पंसद नहीं आया और उन्होंने हमें गालियों से उत्तर दिया है जो कि पौराणिक असभ्यता का अभिन्न अंग है। जिन्होंने माधवाचार्य की पुस्तक

को देखा है वे हमारे उत्तर को पढ़कर देखेंगे कि किस कदर यह पण्डित उत्तर देने में चारों खाने चित्त गिरा है।

कृष्ण पर व्यभिचार का दोष

हमने लिखा था कि गोपाल सहस्रनाम ग्रन्थ में श्रीकृष्णजी को चोर और व्यभिचारियों का शिरोमणि लिखा है। यथा-"गोपाल कामिनी जारश्चोर जार शिखामणि है" "श्लोक १३७" इस पर विपक्षी ने लिखा है कि 'जार' शब्द का अर्थ हमने गलत किया है वास्तव में यहां जार शब्द का अर्थ 'व्यभिचारी' ही है पाठक सनातनी पंडितों का अर्थ जो बंबई भूषण प्रेस मथुरा ने उक्त ग्रन्थ की टीका में छापा है देखें ("गोपाल कामनी जारः) गोपियों में प्रेम रखने से। (चोर जार शिखामणि) चोर और व्यभिचारियों में शिरोमणि होने से।" अर्थात् कृष्ण, चोर और व्यभिचारियों के शिरोमणि थे। यह अर्थ हमारा या किसी आर्य समाजी का किया हुआ नहीं है, सनातनी पण्डितों का है। वास्तव में यही अर्थ ठीक है। माधवाचार्य अपना सारा पाखण्ड फैला कर भी इस अर्थ को मिथ्या नहीं कर सकता है। बकवास भले ही करता रहे। गोपाल किस प्रकार कामिनी जार थे यह भी पुराणों में निम्न प्रकार स्पष्ट किया है।

पुराण में गोपियों से कृष्ण का रमण करना

ता वीर्य माणाः पतिभिः पितृभिर्भ्रातृमिस्तया।
कृष्ण गोपांगना रात्रो रमयंति रतिप्रियाः ।।५९।।
सौअपिकैशोर कबयो मानयन्मधुसूदन।
रेमेतामि यमेयात्मा क्षपासु क्षापिता हितः ।।६०।।

(विष्णु पुराण अंश ५ अध्याय १३)

अर्थ– वे गोपियां अपने पति, पिता और भाइयों के रोकने पर भी नहीं रुकती थीं रोज रात्रि को वे रति ''विषय भोग'' की इच्छा रखने वाली कृष्ण के साथ रमण ''भोग'' किया करती थीं ।।५९।। कृष्ण भी अपनी किशोर अवस्था का मान करते हुए रात्रि के समय उनके साथ रमण किया करते थे ।।६०।। कृष्ण गोपियों के साथ किस प्रकार रमण किया करते थे, इसके लिए स्पष्ट प्रमाण देखिए, जो पुराण रचने वाले धूर्तों ने कृष्ण को कंलकित करने को लिखे हैं।

एवं परिष्वंग करामिमर्श स्निग्धेक्षणद्दाम विलास हासै: ।
रेमे रेमशो व्रज सुन्दरीभि यथार्भक: प्रतिबिम्ब विभ्रम: ।।१७।।

अर्थ – कृष्ण कभी उनका शरीर अपने हाथों से स्पर्श करते थे, कभी प्रेम भरी तिरछी चितवन से उनकी ओर देखते थे, कभी मस्त हो उनसे खुलकर हास विलास 'मजाक' करते थे। जिस प्रकार बालक तन्मय होकर अपनी परछाई से खेलता है वैसे ही मस्त होकर कृष्ण ने उन ब्रज सुन्दरियों के साथ रमण, काम क्रीड़ा 'विषय भोग' किया। आगे देखिये –

कृष्ण विक्रीडितं वीक्ष्य मुमुर्ह:खेचर स्त्रिय।
कामार्दिता: शशांकश्च सगणां विस्मितोअभवत्।।१९।।
कृत्वा तावन्तमात्मानं यावतीर्गोपयोषित: ।
रेमे स भगवांस्ताभिरात्मारामोअपि लीलया ।।२०।।
तासांमति विहारेण श्रॉंतानां वदनानिस:।
प्रामृजत करुण: प्रेम्णाशंतमेनागंव पाणिना ।।२१।।

(भागवत, स्कन्द १० अध्याय ३३)

अर्थ– कृष्ण के रास की काम क्रीड़ा देखकर देवताओं की पत्नियां भी कामार्दित हो गई। कामदेव की उग्र इच्छायें पैदा हो जाने से उनके शरीर कामरस से अर्दित अर्थात गीले हो गए। चन्द्रमा, तारों व ग्रहों के साथ चकित रह गया। कृष्ण ने जितनी गोपियां थी उतने ही रुप रखकर उनके

साथ रमण किया। जब रति रमण करने से वे सब बहुत थक गई (और उन्हें पसीने आ गए) तो कृष्ण जी ने अपने कोमल हाथों से उन प्रेमिकाओं (गोपियों) के मुंह पोंछे। आगे देखिये -

नद्याः पुलिनमाविश्य गोपी मिर्हिम बालुकम्।
रेमे तत्तरलानन्द कुमुदामोह वायुनाः ।।४५।।
बाहु प्रसार परिरम्भकलारकोरु, नीवीस्तनालभ ननर्मनखाग्रपातैः।
क्ष्वेल्यावलोक हसितैर्व्रज सुन्दरीणां, मत्तम्भयन् रतिपति रमयांश्चकार।।४६।।

(भागवत स्कन्द १० अध्याय २९)

अर्थ--कृष्ण ने जमुना के कपूर के समान चमकीले बालू के तट पर गोपियों के साथ प्रवेश किया। वह स्थान जलतरंगों से शीतल व कुमुदिनी की सुगंध से सुवासित था। वहां कृष्ण ने गोपियों (ग्वालिनों) के साथ रमण (भोग किया) बाहें फैलाना आलिंगन करना, गोपियों के हाथ दबाना, उनकी चोटी पकड़ना, जांगों पर हाथ फेरना, लंहगे का नाड़ा खींचना, स्तन (पकड़ना) मजाक करना नाखूनों से उनके अंगों को नोच-२ कर जख्मी करना, विनोदपूर्ण चितवन से देखना और मुस्कराना तथा इन क्रियायों के द्वारा नवयोवना गोपियों में कामदेव को खूब जाग्रत करके उनके साथ कृष्ण ने रात में रमण (विषय भोग) किया।

इसमें कामदेव को जागृत करके रमण करना स्पष्ट बताता है कि रास की आड़ में विषय भोग किया जाता था।

नृत्यन्ती गायती काचित् कूजन्नूपुर मेखला।
पार्श्वस्याच्युत हस्ताब्जं श्रांताधात् स्तनयो शिवम्।।

(भागवत् स्कन्ध १० अध्याय ३३ श्लोक १४)

अर्थ - कोई गोपी अपने नूपुर और करधनी के घुँघरुओं को झनकारती हुई नाँच और गा रही थी। बहुत थक गई, तब उसने अपने ही बगल में खड़े श्यामसुन्दर कृष्ण के शीतल करकमलों को अपने स्तनों पर रख

लिया। (अर्थात छातियां मसक्वा कर थकावट मिटा डाली)।

यह सब क्यों होता था? इसलिए कि ''तमेव परमात्मनं जार बुद्धियापि संगता'' (भागवत स्कंध १० अध्याय २९ श्लोक ११)

अर्थात् - यह बात नहीं कि, रती युद्ध विशारद कृष्ण का ही गोपियों में ऐसा भाव रहता हो वरन् गोपियों का भी कृष्ण में व्यभिचार भाव रहता था। उसके लिए जरा और स्पष्ट प्रमाण देखिए-

वर्तमान पौराणिक सनातन धर्म में राम व कृष्ण, विष्णु के अवतार माने गऐ है। विष्णु का अवतार ही इस पृथ्वी पर व्यभिचार करने के लिए होता है कृष्ण के रुप में विष्णु केवल अपनी व्यभिचार भावना को पूरी करने को आया था। यह बात निम्न प्रमाण से स्पष्ट है। देखिये -

विष्णु के अवतारों का रहस्य

भ्रातृणां दैत्य मुख्यानाँ हतानां दारुणे युधि ।
स्त्रियो हृत्वा तु पताले चिक्रीड़ च मुमोद च ।।
त्रेतायुगे रामरूपि बिष्णु सम्प्राप्ये जानकी ।
नो तृप्त: स्त्री विलसानां वित्तस्य च सुतस्य च।।
रैव: संप्रेषणाश्चापि प्रोषितस्य स्त्रियामपि ।
तस्मात् कलियुगे भूमौ ग्रहीत्वा जन्म केशव ।।
वासुदेवस्य देवक्याँ मथुरायां महाबल: ।
बालस्तु गोप कन्याभिर्वने क्रीड़ा चकार स:।।
दश लक्षाणि पुत्राणां गौपालानां ससर्ज ह ।
ततस्तु योवना क्राँतो रुक्मिणी प्रददर्श ह ।।
विवाहयित्वा पुत्रांश च प्रद्युम्ना दद्याश्च निर्यमे ।
तथापि नरक दैत्यं प्राग्ज्योतिषमतिं बलात् ।।

हृत्वा स्त्रीणाँ सहस्राणि षोडशैव जहार सः ।
तप्सां रति फंल भुक्त्वा पुत्राणां नवतिं तथा ।।
सहस्त्राणि ससर्जासु मत्स्ये चादै महाद्भुतम् ।
स्त्रीणां तथापि नो तृप्तो दिव्यानां तुरेतेर्यदा ।।
तथः राधा स्त्रियं काचिन्न धैर्या दधर्षयत् ।
तथापि परनारीणां लम्पटो नित्यमेवहि ।।
(शिवपुराण धर्म संहिता अध्याय १०)

अर्थ- भगवान विष्णु राक्षसों को मारकर उनकी स्त्रियों को पाताल में ले गया तथा उनके साथ क्रीड़ा करता व मजे मारता रहा। त्रेता युग में राम ने जन्म लेकर जानकी से विवाह किया। किन्तु स्त्रियों के विलास से तृप्त नहीं हुआ और वन में जाने के कारण गर्भाधान भी यथेष्ट नहीं कर सका। इसलिए कलियुग के आरम्भ में कृष्ण अवतार धारण किया और बालकपन में गोपियों (ग्वालिनों) से क्रीड़ा (भोग) करके दस लाख लड़के पैदा कर डाले। तब भी स्त्री भोगों से तृप्ति नहीं हुई तो युवा अवस्था में रुक्मिणी से शादी करके प्रद्युम्न आदि संतानें पैदा की। तब भी तृप्त न हुए तो प्राग्ज्योतिष के राजा नरक को मारकर सोलह हजार औरत लाए और उनसे भोग करके ९० हजार लड़के पैदा कर डाले। फिर भी तृप्ति न हुई तो राधा नाम की औरत को पकड़ लाए। इतना स्त्री भोगों को भोगने पर भी भगवान नित्य ही नारियों के लम्पट हैं।

इस प्रमाण से स्पष्ट है कि पुराणों के अनुसार विष्णु के अवतार कृष्ण केवल बहुत औरतों से व्यभिचार करने के लिए ही हुआ था। गोपियों से रातों में क्रीड़ा करना, उनकी छातियां मरोड़ना, उनके लँहगों के नाड़े खोलना, उनमें कामदेव को जाग्रत करके उनके साथ भोग करना और दस लाख लड़के उन ग्वालिनों से वन में पैदा कर देना, १६००० औरत बदमाशी के लिए पकड़ लाना और विषय भोग द्वारा ९० हजार लड़के

उनसे पैदा कर डालना क्या प्रयोजन रखता है ? क्रीड़ा, विहारं लम्पट रति फल आदि शब्दों का अर्थ यहाँ स्पष्ट रुप से केवल विषय भोग करना ही है, कृष्ण का विशेषण 'जार शिखामणि' अर्थात व्यभिचारियों के शिरोमणि पुराणों के रहते सौ फीसदी सत्य है माधवाचार्य तो बेचारा है किस गिनती में, भारत के सारे पौराणिक पण्डित मिलकर भी इसका और कुछ अर्थ नहीं कर सकते हैं। यह हमारा दावा है।

भगवतगीता अध्याय १८ में श्रीकृष्ण को योगेश्वर बताती है तो सनातनी धर्मग्रन्थ पुराण में उनकों भोगेश्वर सिद्ध करने की कोशिश करते है, धिक्कार है हजार बार ऐसे गन्दे सनातन धर्म को !

पाठकों ने ऊपर देखा है कि सनातन धर्म में अवतार विष्णु के होते हैं और वह भी व्यभिचार की भावना से होते हैं। मानव कल्याण की भावना उनकी नहीं होती है। यह बात शिव पुराण के प्रमाण से स्पष्ट हो चुकी है। यह विष्णु कहाँ रहता है यह भी आपको बताते हैं।

विष्णु के निवास स्थान का पता

इस पृथ्वी के सोलह करोड़ योजन ऊपर आकाश में विष्णुलोक है जिसमें विष्णु और उसकी पत्नी लक्ष्मी निवास करते हैं। (संक्षिप्त स्कन्ध पुराण पृष्ठ ५७९ गीता प्रेस) इससे पता चला कि यह देवता भी हमारे लिए सर्वदा विदेशी है, जो यहाँ से १६ करोड़ योजन अर्थात् यहां से ६४ करोड़ कोस यानी प्राय: १ अरब २८ करोड़ मील ऊपर कहीं आकाश में निवास करता है। खेद है कि भारत के हिन्दुओं के दिमाग भी विदेशियों की गुलामी में फँसे हैं इन्हें सर्व व्यापक परमात्मा पर कभी विश्वास नहीं रहा। हमारा देश तो विदेशी गुलामी से आजाद हो गया, यदि यहाँ के लोगों के दिमाग भी परदेशी देवताओं की गुलामी से मुक्त हो जावे तथा विष्णु व शिव

मंदिर जो विदेशियों की बौद्धिक गुलामी के देश में अपमानजनक चिन्ह हैं मिट जावें तो देश वास्तव में स्वतंत्र हो जावे।

श्री कृष्ण जी के बारे में पुराणों के गोलोक की एक घटना लिखी है और बताया है कि उनके अवतार लेने का कारण भी लोक कल्याण नहीं था। एक दिन गोलोक में राधिका जी ने उन्हें किसी औरत से कुकर्म करते पकड़ लिया, तो उन्होंने शाप दे डाला वे बोली।

राधा का कृष्ण को शाप

हे कृष्ण बृजकांत! गच्छ मत्पुरतो हरे ।
कथं दुनोषिमां लोलं रति चौर अति लम्पट ।।५८।।
मयाज्ञातोअसि भद्र ते गच्छ - २ ममाश्रमात् ।।६०।।
शाश्वते मनुष्याणां च व्यवहारस्य लम्पट ।
लभतां मानुषी यौनि गौलोकाद् व्रज भारतम् ।।६१।।
हे सुशीले, हे शशिकले, हे पद्मावति माधवी ।
निवार्य ताच्चधूर्तो य किमस्यात्र प्रयोजनम् ।।६२।।
(ब्रह्मवैवर्त पुराण कृष्ण जन्म खण्ड अ० ३)

अर्थात- हे कृष्ण ब्रज के प्यारे, तू मेरे सामने से चला जा तू मुझे क्यों दु:ख देता है - हे चंचल, हे अति लम्पट कामचोर मैंने तुझे जान लिया है। तू मेरे घर से चला जा। तू मनुष्यों की भांति मैथुन करने में लम्पट है, तुझे मनुष्यों की योनि मिले तू गौलोक से भारत में चला जा। हे सुशीले, हे शशिकले हे पद्मावति, हे माधवों! यह कृष्ण धूर्त है इसे निकाल कर बाहर करो, इसका यहां कोई काम नहीं।

इस प्रकार कृष्ण की गौलोक वाली पत्नी राधा ने कृष्ण को व्यभिचार में पकड़कर शाप देकर औरतों से धक्के लगवा कर वहां से निकाल बहार

किया और व्यभिचार कामना पूरी करने कां शाप देकर भारत में जन्म दिलाया। यहां आकर भी इन पौराणिक हजरत ने वही कुकर्म किये जिसके लिए यह यहां आये थे।

सनातनियों ! देखों अपने भगवान के चरित्र !! क्या अब भी राधे कृष्ण रटने से तुम्हारी मुक्ति होगी? अक्ल से सोचो। ऐसा चरित्रहीन व्यक्ति जिस भक्त के घर जावेगा वहां पहिले व्यभिचार का सामान ही ढूँढेगा।

इस १११ नंबर के तिलकधारी पाखंडी पंडित ने 'रमण' शब्द के अर्थ पर भारी चिल्ल पुकार मचाई है। इसलिए आगे के प्रमाणों का अर्थ ध्यानपूर्वक पाठक देखें कि रमण शब्द का अर्थ विषय भोग है या कुछ और ?

कलियुगी पंडितों का रमण करना, नारद कहते हैं कि -

पण्डितास्तु कलत्रेण रमते महिषाइव ।
पुत्रस्योत्पादने दक्षा अदक्षा मुक्ति साधने ।।
(महात्म प्रकरणं भागवत अध्याय १ श्लोक ७५)

अर्थ- कलियुग के पौराणिक पंडित औरतों से भैसे के समान रमण करते हैं। वे केवल लड़के पैदा करने में ही कुशल होते हैं। धर्म कर्म व मोक्ष साधनों के बारे में खाक भी नहीं जानते।

भैंसा भैस के साथ जिस प्रकार भैंस के गुप्तांग को सूँघ-सूँघ कर अन्धाधुन्ध (भोग) करता है ठीक वैसे ही माधवाचार्य आदि सनातनी पोप पंडित स्त्रियों से केवल रमण करने में कुशल होते हैं यह शब्द हमारे या किसी अन्य आर्य समाजी के कहे हुए नहीं हैं। सनातनी पंडितों पर नारद बाबा का फतवा अवश्य सत्य होगा। यहाँ पर रमण अर्थ केवल विषय भोग करना है, यह स्पष्ट है। फिर रमण चाहे भैंस की तरह किया जावे या महादेव और सती की तरह अथवा कृष्ण और कुब्जा की तरह।

शिव और सती का रमण

रेम ने शेके तमसोढु सती श्रान्ताभवत्तदा ।
उवाच दीनयावाचा देव देव जगत्गुरुम् ।।
भगवन्नहि शंक्नोि तब भारं सुदु:सहम् ।
क्षमस्वामां महादेव: कृपां कुरु जगत्पते ।।
निशम्य वचनं तस्या भगवान् वृषभध्वजे: ।
निर्भरं रमणं चक्रे गाढ़ निदय मानस: ।।
कृत्वा सम्पूर्ण रमणं सती च त्यक्त मैथुना ।
उत्थानाय मनश्चक्र उभयौस्तेज: उत्तमम् ।।
पपात धरणी पृष्ठे तै व्याप्त अखिलं जगत् ।
पातालेभृतलेस्वर्गे च शिवलिंगास्तदा भवन् ।।

(शब्द कल्पद्रुम कोष 'लिगं' शब्द की व्याख्या)

अर्थ- शादी के बाद एक दिन शिवजी नववधू सती से 'रमण' करने लगे तो सती थक गई और महादेव जी के बोझ को न सह सकी, और बड़ी दीन वाणी में बोली, हे जगद्गुरु ! आपके दु:सह भार को मैं नही सह सकती हूं । मुझे बस आप क्षमा करो । हे जगत्पते । मेरे ऊपर दया करो । तब महादेव जी ने यह सुनकर बड़ी निर्दयता से खूब मैथुन (रमण) किया । संपूर्ण मैथुन कर चुकने पर थकी हुई सती ने उठने की इच्छा की । तब दोनों का उत्तम वीर्य पृथ्वी पर गिर पड़ा । वीर्य से सारा जगत व्याप्त हो गया । उस वीर्य से पृथ्वी, स्वर्ग और पाताल तीनों लोकों मे योनियों समेत शिवलिंग पैदा हो गए ।

महादेव जी ने किस प्रकार रमण किया, रमण शब्द का अर्थ पुराणों में जहां कृष्ण के राधा व गोपियों के साथ आया है वहाँ विषय भोग ही

अर्थ होगा। जहां योगी अथवा भक्त व ईश्वर के संबंध के अर्थ में आता है, वहां भक्त या योगी का ईश्वर के ध्यान में तन्मय (मग्न) होने के अर्थ में आता है पर जिसके हिए की भी फूट चुकी हों ऐसे १११ नंबरी पाखंडी की समझ में कैसे आवे, जिसकी खोपड़ी में मिथ्यार्थ भरा हुआ है वह सत्यार्थ को कैसे समझ सकता है ? जो केवल भैंस की तरह दिन रात स्त्रियों से रमण करना ही जानता हो ऐसा ढोंगी पण्डित हमसे 'रमण' का अर्थ पूछे तो यह संसार का आठवाँ आश्चर्य होगा।

पुराणों के अनुसार 'कामशास्त्र विशेषज्ञ' कृष्ण गोपियों के साथ किस प्रकार से रमण करते थे, इसको खुलासा करने के लिए भागवतकार ने लिखा है 'रेमे रेमेशो ब्रज सुन्दरीभि:' अर्थात कृष्ण उन प्रेयसी ब्रज सुन्दरियों के साथ विषय भोग (रमण) किया करते थे। गीता के कृष्ण जी ने जीवन में कभी व्यभिचार नहीं किया। पर पाखंडी पोप पंडितों को इसी में बड़ा मजा आता है कि निष्कंलक कृष्ण को व्यभिचारी बताया जादे और उस आड़ में स्वयं खूब कुकर्म किए जावें।

कुब्जा के साथ कृष्ण का रमण करना

विद्राँचलेभे सा कुब्जा निद्रेशो पि ययौ मुदा ।
वोधया मास तां कृष्णो न दासीश्चापि निद्रिता: ।।
त्यज निद्रां महा भागे श्रृंगारं देहि सुन्दरि ।
इत्युक्त्वा श्री निवाश्च कृत्वा तामेव वक्षसि ।।
नग्नां चकार श्रृंगार चुंबनं चापि कामुकीम् ।
सा सस्मिता च श्रीकृष्णं नव संगम लज्जिता ।।
चुबुम्ब गड़े क्रीड़े तां चकार कमलां यथा।
सुरते विरतिनस्ति दंपति रति पन्डितौ।।

नाना प्रकार सुरते वभूवतत्र नारद ।
स्तन श्रोणि युग्म तस्या विक्षतस्च चकारह: ।।
भगवान्नखैस्तीछणे: दशनैरधरं वरम् ।
निशावसान समये वीर्याध नं चकार स: ।।
सुख संभोग भोगेन मूर्छामाप च सुन्दरी ।
भगवानापितत्रैव क्षणं स्थित्वा स्वमन्दिरम् ।।
जगाम यत्र नन्दश्य सानन्दौ नन्द नदन: ।
(ब्रह्मवैवर्त पुराण कृष्ण जन्म खंड ७२)

अर्थ- वह कुब्जा सो गई और निद्रा के स्वामी कृष्ण भी यहाँ प्रसन्नता से गए। श्रीकृष्ण ने कुब्जा को जगा लिया। सोई हुई दासियों को नहीं जगाया। कृष्ण बोले हे महा भाग्यशाली ! अपने श्रृंगार को दानकर। यह कहकर कृष्ण ने कुब्जा को गोद में लेकर चुंबन किया और उस कामुकी को नंगा करके भोग करना आरम्भ कर दिया। वह समागम से लज्जित हुई मुस्करा कर कृष्ण को नंगा करके चुम्बन करने लगी तब कृष्ण ने उसके कपोल चूमकर लक्ष्मी की भाँति गोद में ले लिया। क्योंकि दोनों का जोड़ा काम भोग करने में चतुर था इसलिए काम भोग का अन्त ही न आता था। हे नारद ! वहां नाना प्रकार से कामभोग किया गया। भगवान कृष्ण ने उसके स्तनों को नाखूनों से जख्मी कर दिया और दाँतों से उसके होठों को काट खाया। उस रात कृष्ण ने आखिर शुक्राधान कर दिया। सुख संभोग से वह सुन्दरी मूर्छित हो गई। भगवान कृष्ण भी वहां थोड़ी देर ठहरकर अपने मकान को चले गये, जहाँ नन्द सानन्द ठहरे हुए थे।

पाठक देखें सनातनी कृष्ण अवतार का चरित्र। पुराणों के कृष्ण के व्यभिचारी शिरोमणि होने में अब भी क्या कोई सदेंह है। पाखंडी शिरोमणि गाली गलौज शास्त्री माधवाचार्य अब बतावें कि कुब्जा का ठोड़ी पकड़कर उसका कुबड़ापन मिटाया जा रहा है, या स्तन दाब दाब

कर व उसे नंगा करके व्यभिचार किया जा रहा है ? अरे निर्लज्ज पोपो? यदि जरा भी शर्मोहया बाकी हो तो डूब मरो चुल्लू भर पानी में। तुमने महानात्मा कृष्ण को बड़ा कंलकित किया है।

कृष्ण के तीस करोड़ स्त्रियां थीं यह "त्रिशत्कोटि च गोपिनां गृहीत्वा भर्तराज्ञया" ब्रह्मवैवर्त पुराण उत्तरार्ध अध्याय ११५ श्लोक ८७ में साफ लिखा है। यदि उल्लू को दिन में भी न दीखे तो सूर्य का क्या दोष है? मालूम होता है कि हजरत माधवाचार्य ने ब्रह्मवैवर्त पुराण की शक्ल भी नहीं देखी है यदि पढ़ा होता तो यह प्रमाण उसे प्रमाणरुप में मिल जाता। बेचारा वैसे ही १११ नं० का तिलक लगाकर ढ़ोंग बनाकर पाखन्डाचार्य बन बैठा है। कुब्जा की कथा को देखकर हमने माधवाचार्य के उस झूठ का पर्दाफाश किया है जो उसने लिखा था कि कुब्जा का कोई दुराचार का संबंध नहीं था। कृष्ण ने डाक्टरी करके ठोड़ी पकड़कर झटका मारकर कुब्जा का कुबडापन दूर किया था। अब राधा कौन थी? इस प्रश्न पर हम उसके पाखंड का निराकरण करते हैं। हमने विज्ञापन में ब्रह्मवैवर्त पुराण से यह सिद्ध किया था कि राधा कृष्ण के बामांग से पैदा होने से कृष्ण की पुत्री थी, रायण से विवाह होने से वह कृष्ण की पुत्र वधू थी। क्योंकि रायण गौलोक में कृष्ण के अंश से पैदा होने से उनका उस रिश्ते में पुत्र था। रायण कृष्ण की माता यशोदा का भाई होने से कृष्ण का मामा लगता था। अतः इस रिश्ते से राधा कृष्ण की मामी हुई। इस हमारे लेख पर माधवाचार्य का दिमाग चक्कर खाने लगा। उन्मत्त की तरह आप प्रलाप करते हुए सफाई देने बैठे, और अपनी पुस्तक में पृष्ठ १९ पर हमारे प्रमाणों को स्वीकार करते हुए आपने लिखा कि असली राधा गायब हो गई और छाया रूप राधा को छोड़ गई। उसकी रायण से शादी हुई। इस पागलपन की बात को कोई उस जैसा बुद्धिहीन ही मान सकता है, जो राधा गायब हो गई उसकी व छाया रूप राधा

की आत्मा एक थी या पृथक-पृथक थी यदि एक थी तो आत्मा के दो टुकड़े होना गीता व कोई शास्त्र नहीं मानता है। यदि पृथक-२ थी तो यह कहना मूर्खता की बात है कि नई राधा पुरानी राधा की छाया थी पता नहीं सनातनी पण्डितों ने अपनी अक्ल कहाँ बेच खाई है, जो ऐसी चन्डूखाने की बेतुकी असंभव बातों पर विश्वास करते हैं कि कलावती के गर्भाशय में से हवा निकल पड़ी और बजाय पंचतत्वों के केवल वायु से राधा नाम की औरत बन गई। इसलिए हम कहते हैं कि पुराण बनाने व उन पर ईमान लाने वाले दोनों अज्ञानी हैं और भंग के नशे में रहते हैं। माधवाचार्य पृष्ठ १८ पर लिखता है कि राधा का कृष्ण से विवाह हुआ था और पृष्ठ २२ पर लिखता है कि राधा से कृष्ण का कभी विवाह या गौना नहीं हुआ। वह आजन्म ब्रह्मचारिणी रही थी। दोनों में कौन सी बात ठीक है यह वही जाने। आगे लिखता है कि राधा प्रकृति को कहते हैं। पाठक राधा से कृष्ण के व्यभिचार की कथा नीचे पढ़े और देखें कि राधा प्रकृति है या एक व्यभिचारिणी औरत है ?

राधा से कृष्ण का रमण

एकदा कृष्ण सहितो नन्दौ वृन्दावनं ययौ ।
एतस्मिन्नंतरे राधाजगाम कृष्ण सन्निधिम् ।।
तमुवाच हरिस्तत्र स्मेरानन सरोरुहाम् ।
आगच्छशयने साध्वि कुरुवक्षः स्थलेहिमाम् ।।
तिष्ठत्यहं शयानस्त्वं कथाभिर्यत्क्षण गतम् ।
वक्षस्थले च शिररि देहिते चरणाम्बुजम् ।।
प्रणम्य श्रीहरिं भक्तया जगाम शयनं हरे ।
कृष्ण चर्वित ताम्बूलं राधिकायै मुदाददौ ।।

राधा चविंत ताम्बूलं ययाचे मधुसूदनः ।
करेघृत्वा च मां कृष्णस्थापयामास वक्षसि ।।
चकार शिथिल वस्त्रं चुम्बनं च चतुर्बिधम् ।
वभूव रति युद्धेन विच्छन्ना क्षुद्रघंटिका ।
चुम्बनेनौष्ट रागश्चं ह्याश्लेषण च पत्रकम् ।
पुलकांकित सर्वांगी वभूव नव संगमात् ।
मुर्छामवाप साराधावुबधे न दिवानिशम् ।।
प्रत्यगेनेव प्रत्यंगमगेतांग समाश्लिषत् ।
श्रृंगारष्टविधं कृष्णश्चकार काम शास्त्रवित् ।
पुनस्तां च समाश्लिष्यसस्मितांवक्रलोचनाम् ।।
क्षतिविक्षत सर्वांगी नख दन्तैश्यकार ह ।
वभूवशब्दस्तत्रैव श्रृंगार समरोद्बः ।।
निर्जने कौतुकात् कृष्णः कामशास्त्र विशारदः ।
निबते काम युद्धे च सस्मिता वक्रलोचना ।
नित्य नक्तं रति तत्र चकार हरिणा सह ।।

(ब्रह्मवैवर्त पुराण कृष्ण जन्म खंड अ० १५)

अर्थ- एक दिन कृष्ण, नंद के साथ वृन्दावन गए। इतने में राधाजी कृष्ण के पास आ गई। उस कमल मुख वाली से कृष्णजी कहने लगे हे प्यारी पलंग पर आजा मुझे बगल में ले ले। वह बोली मैं बैठी हूं आप लेटे हैं इस प्रकार व्यर्थ समय जा रहा है। मेरी बगल और शिर में चरण अर्पण करो। राधा कृष्ण को प्रणाम करके कृष्ण के पलंग पर गिरकर कृष्ण ने अपना चबाया हुआ पान राधा को दिया और राधा से चबाया हुआ पान कृष्ण ने मांगा। कृष्ण ने हाथ पकड़कर राधा को बगल में ले लिया। उसके कपड़े ढीले कर दिए और चार प्रकार से चुंबन किया। रति युद्ध में एक घंटा हो गया। चूमने से राधा के होठों का रंग और लिपटने से

करधनी नष्ट हो गई। नव समागम से राधा रोमाचिंत हो गयी। वह राधा मूर्छित हो गई और दिन रात होश में नहीं आई। दोनों के अंग से अंग और प्रत्यंग से प्रत्यंग लिपट गये। काम शास्त्र के जानने वाले विशेषज्ञ कृष्ण ने आठ प्रकार से यूं भोग किया। फिर राधा से लिपट कर उस टेढ़ी नजर वाली मुस्कराती हुई को नाखूनों और दांतों से जख्मी कर दिया। काम भोग युद्ध से बड़ा शब्द हुआ। कामयुद्ध की समाप्ति पर वह तिरछी नजर वाली राधा मुस्कराने लगी। वह राधा रात को हमेशा कृष्ण के साथ भोग किया करती थी।

यह पुराणों का गंदा कोकशास्त्र। राधा कृष्ण के बांए अंग से पैदा हुई थी। राधा के साथ कृष्ण का व्यभिचार का संबंध था, यह बात ब्रह्मवैवर्त पुराण मानने वालों को बराबर माननी पड़ेगी। राधा एक औरत थी, कृष्ण उसे व्यभिचार के लिए पकड़कर लाए थे। यह बात शिव पुराण के पीछे दिऐ गये प्रमाण से सिद्ध है। कृष्ण का गोपियों से व्यभिचार का संबंध था, यह बात विष्णु पुराण-भागवत व शिवपुराण से स्पष्ट हो चुकी है। पौराणिक पंथी पंडित भूमंडल भर में एक भी ऐसा नहीं है जो ऊपर के प्रमाणों का खंडन कर सकें। रमण शब्द का अर्थ जहां हमने (स्त्री प्रंसग) व्यभिचार सिद्ध किया है यह अकाट्य है हम अब एक प्रमाण और ऐसा देते हैं जिससे गोपियों के साथ कृष्ण का व्यभिचार के संबंध का कारण प्रकट हो जावेगा। पौराणिक पंडित अपने पुराणों की गंदी बातों के नमूने देखें और लज्जित हों।

पौराणिक कृष्ण की प्रेमिकायें गोपियां कौन थीं ?

पुरामहर्षय: सर्वे ठंडकारण्य वासिन: ।

दृष्टवा रामं हरिं तत्र भोक्तु मिच्छेत्सु विग्रहम्।।१६४।।
ते सर्वे स्त्रीत्वमापन्नाः समुद्भूतास्तु गोकुले।
हरिं सम्प्राप्य कामे न ततो मुक्त्वा भवार्ण वात।।१६५।।
(पद्मपुराण उत्तर खण्ड अध्याय २४५ कलकत्ता)

अर्थ- रामचन्द्र जी दण्डकारण्य वन में जब पहुंचे तो उनके सुन्दर स्वरूप को देखकर वहां के निवासी सारे ऋषि मुनि उनसे भोग करने की इच्छा करने लगे। उन सारे ऋषियों ने द्वापर के अन्त में गोकुल की गोपियों के रुप में जन्म लिया और रामचन्द्र जी कृष्ण बने तब उन गोपियों के साथ कृष्ण ने भोग किया। इससे उन गोपियों की मोक्ष हो गई। वरना अन्य प्रकार से उनकी संसार रुपी भवसागर से मुक्ति भी न होती।

सनातनी लोग इसलिए कृष्ण को गोपीबल्लभ भी कहते हैं कि उन्होंने विषय भोग करके गोपियों (ग्वालिनों) को इस भव सागर से पार कर दिया। यह है "गोपीबल्लभ राधेश्याम" नाम से कीर्तन करने का रहस्य यदि आजकल कहीं यह पौराणिक कृष्ण आ जावें तो विचारे इन कीर्तन पंथियों का भी किसी ऐसे ही मिलते जुलते नुस्खे से उद्धार हो जाए। दिन रात ये बिचारे "राधेकृष्ण" रटने वाले कभी मुक्ति न पा सकेंगे। मुक्ति के नुस्खे भी पुराणों के बड़े मार्के के नुस्खे होते हैं और यह अवतार का ही काम होता है कि उन नुस्खों का प्रयोग करके अपने भक्तों का कल्याण किया करें।

इसलिए हमारा यह लिखना है कि 'राधा रति सुखो पेतो' राधा काम फल प्रदः' व राधालिंगन संमोहे' (गोपाल सहस्त्रनाम) इसका अर्थ है कि कृष्ण राधा का आलिंगन करते थे उसे काम फल विषयानन्द या रति सुख प्रदान करते थे सर्वथा सत्य है। रति शब्द का अर्थ इस प्रसंग में विषय भोग करना ही है दूसरा नहीं, झूँठे अभद्रभाष्यों की शरण लेने से सत्य को दबाया नहीं जा सकता है। क्योंकि पुराणों के अनुसार कृष्ण

का राधा से नाजायज ताल्लुक था पुराणों की यदि पिछली कथायें सत्य हैं। तो कृष्ण के बारे में पुराण का यह लिखना भी सर्वथा सत्य मानना पड़ेगा कि-

साक्षाज्जारश्च गोपीनां दुष्ट परं लम्पटः ।।६१।।
आगत्य मथुरा कुब्जां जघान मैथुनेव च।।६२।।
(ब्रह्मवैवर्त पुराण कृष्ण जन्म खन्ड उत्तरार्ध अध्याय ११५)

अर्थात्- कृष्ण गोपियों का ज़ार (व्यभिचारी) दुष्ट, बड़ा लम्पट था। मथुरा में आकर उसने मैथुन कर करके कुब्जा को मार डाला।

क्रीड़ा, रति, रमण, लम्पट व ज़ार शब्दों का अर्थ "व्यभिचार" ही इन स्थानों पर होगा, यह हमारे ऊपर के लेख को देखकर सत्य सिद्ध हो जाता है। चाहे शूकर अवतार के यह चेले सनातनी पंडित कितना ही जोर क्यों न लगावें, पर इस सत्य को काट नहीं सकते कि पुराणों ने कृष्ण महाराज को धूर्त व्यभिचारी शिरोमणि माना है, जबकि गीता के श्रीकृष्ण महाविद्वान महानात्मा व आदर्श चरित्रवान थे। पुराणों की राधा, कृष्ण की गन्दे अर्थो में प्रेमिका थी। यदि किसी के बाप दादे दुश्चरित्र भी हों तो भी लायक औलाद उनके चरित्र के धब्बों को छिपाती है। पर पौराणिक सनातन धर्म में निष्कंलक कृष्ण महाराज के साथ कंलकित राधा का नाम जोड़कर यह संकीर्तनी कपूती औलाद ढोल मजीरे पीट पीट कर चिल्लाती है कि हमारे पुरखे (अवतार) दुराचारी थे उनकी एक रखेल (आशना) राधा थी, वे गोपियां (पशु चराने वाली ग्वालिन छोकरियों) से व्यभिचार किया करते थे। जब ये घर वाले ही अपने पूर्वजों को बदनाम करते हैं तो विधर्मी ईसाई मुसलमानादि उनको क्यों कर बदनाम नहीं करेंगे पुराणों में सारी की सारी ऐसी ही बेहूदी बातें भरी पड़ी हैं। राध ा कृष्ण की बेटी है। पुत्रवधु है और मामी है। और उसी राधा से कृष्ण

का व्यभिचार चलता है। भगवान राम से ऋषि लोग भोग करने की इच्छा करते हैं। गोकुल में ऋषि लोग गोपियाँ बनती हैं रामचन्द्रजी कृष्ण बनकर उनसे भोग करते हैं और भोग करने से वे गोपियाँ मुक्त हो जाती हैं। इसलिए कृष्ण को गोपीबल्लभ कहा गया है। कैसी धूर्तता की बातें बदमाशों ने घढ़-घढ़ कर लिखी हैं, जिन्हें पढ़कर भी शर्म आती है। पौराणिक पंडित मंडल तथा उनका गुरु पाखंडी शिरोमणि माधवाचार्य इन बातों को सही मानता है। और हमारे आक्षेपों के शब्दाडाम्बर में उड़ाने की कोशिश करता है। यह पुराण प्राय: दो हजार वर्ष के इध ार अंग्रेजों के आने तक बने हैं। ऐसा पुराणों में वर्णित इतिहास एवम् उनकी भाषा शैली से स्पष्ट है। इनमें भारी कमीवेशिया (मिलावट) भी की गई हैं। भागवत महात्म्य प्रकरण में अध्याय १ श्लोक ३६ में लिखा है-

''आश्रमा: यवनैरुद्रस्तीर्थानि सरिस्तथा। देवता यतनान्यत्र दुस्टर्नष्टानि भूरिश:'' अर्थात्-नारदजी कहते हैं कि कलियुग में यवनों ने भारत की नदियों तीर्थो व आश्रमों पर कब्जा कर लिया है व देव मंदिरों को नष्ट कर डाला है। इस श्लोक में आया यवन शब्द जो निश्चय पूर्वक मुसलमानी राज्यकाल का द्योतक है। क्योंकि महाभारत के बाद ऐसी कोई यवन जाति मुसलमान के अलावा नहीं हुई जिसने समस्त भारत के मंदिरों तीर्थों व आश्रमों पर अधिकार करके उन्हें नष्ट भ्रष्ट किया हो। यह केवल मुसलमानों ने किया था। अत: इस श्लोक से स्पष्ट है कि ये पुराण भारत में मुसलमान राज्य कायम होने के बाद बने हैं। इसी प्रकार पुराणों में तम्बाकू पीने का निषेद्य है।

धूम्रपानरत विप्र दान दधाति यो नर:।
दातारी नरक यॉंति ब्रह्मणो ग्राम शूकर:।।

अर्थात-तम्बाकू पीने वाले ब्राह्मण को दान देने वाला व्यक्ति नरक

में जाता है और वह ब्राह्मण मर कर गाँव का सूअर बनता है। जहाँगीर बादशाह ने 'तजोक' ग्रन्थ में लिखा है कि भारत मे तम्बाकू आलू व गोभी एक अमरीकन पादरी अकबर के राज्य में भारत लाया था। तभी से इसका यहाँ प्रचार व पैदावार प्रारम्भ हुई। इससे पूर्व ये चीजें भारत में नहीं होती थीं। अत: तम्बाकू, का निषेद्य होने से स्पष्ट है कि ये पुराण अकबर के बाद बना है। ये इतिहास के तथ्य हैं, अत: कोई भी इन्हें काट नहीं सकता है। बकवास भले ही करता रहे।

पुराणों में अँग्रेजी

रविवारे च सन्डे च फाल्गुने चैत्र फरवरी।
षष्टिश्चसिक्सटी ज्ञेया तदुदाहपण मीद्रशम् ।।३७।।
(भविष्य पुराण प्रतिसर्ग खण्ड १ अ० ५)

अर्थात - रविवार को सन्डे, फाल्गुन को फरवरी तथा षष्ठ को सिक्सटी अँग्रेजी में कहते हैं-इससे स्पष्ट है कि यह पुराण अँग्रेजो के बाद बना है।

भागवत में स्कन्द १२ अध्याय ३३ श्लोक ९ में लिखा है।

''अष्टादश श्री भागवत मिष्यते''

अर्थात- भागवत में कुल १८००० श्लोक हैं। पर गिनने पर भागवत में केवल १४१८० श्लोक मिलते हैं। स्पष्ट है कि भागवत में से प्राय ४०००० श्लोक निकाल डाले गए हैं। अत: वर्तमान भागवत कटा छटा होने से अधूरा एवं अप्रमाणिक ग्रन्थ है। पुराणों के बारे में यह कहना कि व्यास ऋषि ने पुराणों को बनाया था, एक पागलपन की बात है। क्योंकि स्वयं पुराण में लिखा है कि ''पुराण धूर्तो ने बनाये हैं'' देखिये -

धूर्त: पुराण चतुरै: हरि शकंराणाम्।
सेवा पराश्च विहितास्तव निर्मितानाम।।१२।!
(दिवी भागवत स्कन्द ५ अध्याय १९)

अर्थात-पुराण बनाने वाले अनेक चतुर धूर्त लोगों ने शिव और विष्णु की पूजा की श्रेष्ठता अपने पेट भरने के लिए लिख मारी है। इससे सिद्ध है कि पुराण बनाने वाले अनेक धूर्त लोग रहे हैं। किसी भी एक व्यक्ति ने पुराण नहीं बनाए हैं।

पुराण की गप्प - महाभारत के बाद रामचन्द्र हुए थे

भागवत् पुराण में अवतारों की दो लिस्टें (सूची) दी है जिनमें यह बताया है कि कौन-कौन अवतार किस-किस के बाद क्रम वार हुए हैं। दोनों ही सूची एक दूसरे के सर्वथा विरुद्ध हैं। पहली फहरिस्त भागवत स्कन्द १ अध्याय ३ में श्लोक ६ से २५ तक है, जिसमें एक कल्कि अवतार सहित कुल २२ अवतार होना माना है, इसमें एक विशेष बात यह मार्के की रही है कि रामचन्द्र को १८ वाँ अवतार माना है, और व्यास ऋषि को १७वें नंबर पर माना है अर्थात रामचन्द्रजी महाभारत के व्यास ऋषि के भी बाद हुए थे। यह भागवतकार की चन्डूखाने की गप्प रही है। सनातनियों के कल्पित २४ अवतार भागवत नहीं मानता है।

दूसरी फहरिस्त (सूची) भागवत स्कन्ध २ अध्याय ७ में दी है। उसमें कुल अवतार २१ माने हैं। इसमें नया पशु अवतार हयग्रीव नाम का घुसेड दिया है और नारद व मोहनी नाम के पहली फहरिस्त के दो अवतारों के नाम नाकाबिल गलत मानकर निकाल डाले गए है। इससे सिद्ध है कि अफीम की पिनक में भागवतकार ग्रन्थ बनाने बैठा था। उसे यह भी पता न रहा कि पीछे क्या लिख मारा है और आगे क्या लिखना है सारे पुराण एक दूसरे के विरोधी हैं और गलत हैं। वास्तव में पुराण ग्रन्थ अति भ्रष्ट ग्रन्थ है। इन वेद विरुद्ध ग्रन्थों को मानने के कारण हिन्दु जाति का बड़ा पतन हुआ है। औरों की बात छोड़ भी दी जावे कलियुगी

माधवाचार्य आदि सनातनी पण्डितों को साक्षात् राक्षसों का अवतार बताया है। प्रमाण देवी भागवत ग्रन्थ स्कन्द ६ में पाठकों को मिलेगा।

लोकमान्य तिलक ने गीता रहस्य पृष्ठ ५०१ पर प्राचीन विष्णु पुराण का निम्न श्लोक लिखा है जिसे अब लोगों ने उसमें से निकाल डाला है।

कृष्ण-२ रटने वाले पापी हैं।

अपहायं निज्र कर्म कृष्णेति यो वादिनः।
ते हरेर्द्वेषिण पापाः धर्मार्थ जन्म यद् धरे।।

अर्थात्- जो लोग वेदोक्त धर्म को त्याग कर केवल हरे कृष्ण जपते रहते हैं वे कृष्ण के दुश्मन हैं, पापी हैं। क्योंकि कृष्ण का जन्म ही वेद धर्म प्रचार के लिए हुआ था।,

इस प्रमाण से वर्तमान कीर्तन प्रणाली गलत सिद्ध हो जाती है। जिसका पुराणों ने प्रचार करके हिन्दु जाति में घोर पांखड़ फैला रखा है। बहुत से अज्ञानी तो कृष्ण को भी छोड़कर राधे राधे रटते हैं। मानों राधा सुन्दरी से उनका कोई निकट का रिश्ता हो। धर्म के नाम पर इस कौम को इन पापों ने किस कदर मूर्ख बनाया है यह अक्लमंद लोग देखें। पुराणों ने एक ईश्वर के स्थान पर हजारों देवी देवताओं की पूजा हिन्दु कौम में जारी करा दी। परमात्मा के स्थान पर महादेव का लिंग (मूत्रेन्द्रिय) जनता से पुजवा डाला। विदेशी देवता विष्णु, शिव व गणेश का (जो कि सर्वथा कल्पित हैं) हिन्दुओं को गुलाम बना डाला पुराणों के अनुसार यह देवता पृथ्वी पर व्यभिचार करने या व्यभिचार में लगे शापों का दन्ड भुगतने को ही आते हैं। इनके गन्दे चरित्रों का पुराणों में सविस्तार वर्णन है। अतः हमारा कहना है कि ईश्वर की प्रार्थना उपासना

स्तुति छोड़कर जो लोग हरे कृष्ण या राधे कृष्ण जपते हैं या कृष्ण के नाम के साथ पुराणों की मान्यतानुसार दुराचारिणी राधा का नाम जोड़ते है वह पापी हैं कृष्ण को बदनाम करते हैं। नाम जपनें के इच्छुकों को शुद्ध मन से ओ३म व गायत्री का मानसिक जप करना चाहिए समस्त वेद एवं शास्त्रों में केवल 'ओ३म' जपने का ही विधान है। प्रणव का सार्थक स्मरण शांत चित्त होकर करने का योग दर्शन ने आदेश दिया है। कल्पित अवतार व विष्णु तथा शिव आदि के मंदिरों पर सर पटकने वाले अपना मनुष्य जन्म व्यर्थ खोते हैं। मर्यादा पुरुषोत्तम आदर्श चरित्र योगेश्वर श्रीकृष्ण महाराज हमारी आर्य जाति के निष्कंलक ईश्वर भक्त महान् पूर्वज थे। उनका नाम जपने के बजाय उनके कार्यों एवं उनके जीवनादर्शो को अपने जीवन में उतारना प्रत्येक व्यक्ति समाज व देश के लिए उपयोगी होगा। सरकार-२ रटने वाले को पागल समझा जावेगा, राज्यभक्त नहीं। राज्य भक्त बनने के लिए 'सरकार' शब्द न रटकर राज्य के नियमों व आदेशों को मानना आवश्यक होगा। उनका पालन करने वाला वास्तव में राज्य भक्त कहा जावेगा। यही बात महापुरुषों के बारे में है। उनका आदर्श अपने जीवन में उतारना ही उनका भक्त होना है न कि कोरा नाम रटना या रामायण का धूँआधार अखंड पाठ करते रहना, चाहे जीवन में एक भी आदर्श का पालन न किया जाता हो।

नारद ने भागवत में साफ-साफ ऐलान कर दिया है कि ये माधवाचार्य जैसे कलियुगी सनातनी उपदेशक पंडित धर्म-कर्म के बारे में खाक भी नहीं जानते हैं। अत: इनकी बात धर्म विषय में बिल्कुल नहीं मानी जानी चाहिए। यह लोग जनता में झू ठे पान्डित्य का कोरा ढ़ोंग बनाए बैठे है।

सीता, राम, कृष्ण, रावण, कौरव, पाँडव, लंका, अयोध्या आदि ऐतिहासिक व्यक्ति व स्थान हुए हैं। यदि कोई इनकों (रामायण व महाभारत को) ऐतिहासिक न माने तो उसकी बात माननीय नहीं होगी।

इसी प्रकार राधा रावण आदि का जन्म व शादी की बातें पुराणों में लिखी हैं। कोई माधवाचार्य जैसा दीवाना हमारे आक्रमण से घबराकर इनकी आध्यात्मिक व्याख्या करने बैठे तो यह घोर पागलपन होगा। यह बात दूसरी है कि हमारे दृष्टिकोण से संपूर्ण पुराण व उनकी कथायें ही झूँठी हैं। पागलों ने राधा नर्तकी की झूँठी कल्पना की उसे कृष्ण की प्रेमिका बनाया और पुराण बनाने वालों ने कृष्ण महाराज के परम पवित्र निष्कंलक जीवन पर गन्दा कलंक लगाया है इसी प्रकार सारे ऋषि मुनियों के आदर्श चरित्रों को पुराणों ने कलंकित किया है। इसलिए एक संस्कृत ग्रन्थकार ने लिखा है, देखिये -

पौराणिका नाम व्यभिचार दोषो न शकनीय कृतिभिः कदाचित्।
पुराणकर्ता व्यभिचार जातः तस्यापि पुत्रो व्यभिचार जातः।।

(सुभाषित रत्न भाण्ड़ागार)

अर्थात्-पौराणिकों में व्यभिचार का दोष बहुत होता है। इसमें कतई शंका न करनी चाहिए। पुराण बनाने वाला व्यभिचार से पैदा हुआ था उसकी औलाद भी व्यभिचार से हुई थी।

अतः वे सनातनी पंडित महान दोषी हैं जो इन पुराणों के दूषित साहित्य को पढ़कर जनता को सुनाते हैं। गीता प्रेस जैसी पुराण प्रकाशक व्यापारी संस्थायें भी धर्म भक्त हिन्दु कौम में पुराणों का घासलेटी साहित्य छाप-२ कर बेचने से जनता को पथभ्रष्ट करने के दोष से मुक्त नही किया जा सकता है पुराणों की गंदी कथाओं की आध्यात्मिक व्याख्यायें ढूँढना विष्ठा के ऊपर सौने के वर्क लगाने के समान है जिसकी बदबू दबाने से नहीं दब सकती है जब आर्य समाजी खंडन मंडन का तर्कपूर्ण द्विधारा चलने लगा तो अब घबड़ाकर पोप लोग पुराणों के व्यभिचार की कथाओं को छिपाने के लिए उल्टे सीधे आध्यात्मिक अर्थ ढूँढने बैठे हैं। परंतु ये उसमें भी फेल हुए हैं।

क्या वेद में राधा का वर्णन है ?

बिल्ली को ख्वाब में छिछड़े ही नजर आते हैं। इस लोकोक्ति के अनुसार-

१- पौराणिक पंड़ितों को वेद में राधा कृष्ण, राम, रावण का वर्णन दीख पड़ता है।

२- मुसलमान को वेद में 'शतमदीन:' पद में मक्का मदीना दीखता है।

३- ईसाई को वेद में 'ईशा वास्यमिदं' में ईशा मसीह नजर आते हैं।

४- कबीर पन्थी को वेद में 'कविर्मनीषी' पद में कबीरदास जी दीखते हैं।

५- एक लाला जी को वेद में 'श्रीश्चते लक्ष्मीश्चते' में अपनी पत्नी 'लक्ष्मीदेवी' का वर्णन मिलता है।

६- पादरी साहब को रामायण में गिरजा पूजन देखकर सीता जी गिरजे में मसीह को पूजती नजर आती हैं।

७- एक मुल्ला को वेद में 'इमाम् तमिद्र' पद में दिल्ली की मस्जिद का इमाम मिल जाता है।

८- 'चेरि छोड़ि होव किरानी' रामायण में 'किरानी' ईसाईयत का सबूत प्रत्यक्ष दीखता है।

९- मांसाहारी को वेद में 'मुरगाायमद्ययूयं' में मुर्गा और शराब नजर आता है।

१०- जैनी को वेद में 'स्वस्तिनस्ताक्ष्र्यो अरिष्टनेमि:' पद में तीर्थकंर नेमिनाथ दीखते हैं।

११- रावण वंशी पंडितों को 'पाहिधूर्तेररावण:' में धूर्त रावण नजर आता

क्या वेद में राधा का वर्णन है ?

बिल्ली को ख्वाब में छिछड़े ही नजर आते हैं। इस लोकोक्ति के अनुसार-

१- पौराणिक पंड़ितों को वेद में राधा कृष्ण, राम, रावण का वर्णन दीख पड़ता है।

२- मुसलमान को वेद में 'शतमदीनः' पद में मक्का मदीना दीखता है।

३- ईसाई को वेद में 'ईशा वास्यमिदं' में ईशा मसीह नजर आते हैं।

४- कबीर पन्थी को वेद में 'कविर्मनीषी' पद में कबीरदास जी दीखते हैं।

५- एक लाला जी को वेद में 'श्रीश्चते लक्ष्मीश्चते' में अपनी पत्नी 'लक्ष्मीदेवी' का वर्णन मिलता है।

६- पादरी साहब को रामायण में गिरजा पूजन देखकर सीता जी गिरजे में मसीह को पूजती नजर आती हैं।

७- एक मुल्ला को वेद में 'इमाम् तमिद्र' पद में दिल्ली की मस्जिद का इमाम मिल जाता है।

८- 'चेरि छोड़ि होव किरानी' रामायण में 'किरानी' ईसाईयत का सबूत प्रत्यक्ष दीखता है।

९- मांसाहारी को वेद में 'मुरगाायमद्ययूयं' में मुर्गा और शराब नजर आता है।

१०- जैनी को वेद में 'स्वस्तिनस्ताक्ष्यो अरिष्टनेमिः' पद में तीर्थकंर नेमिनाथ दीखते हैं।

११- रावण वंशी पंडितों को 'पाहिधूर्तेररावणः' में धूर्त रावण नजर आता

है।

१२- तो पाखंडी शिरोमणि माधवाचार्य को वेद के "इन्द्र वयुमनीराधं हवामहे" इस मंत्र भाग में कृष्ण घुसेड़कर राधा के स्वप्न में गायका सुरैया सुन्दरी नजर आती है।

हिन्दुओं के घर में ही जब वेदों के दुश्मन पौराणिक पंडित मौजूद होवें ओर वे जान बूझकर धूर्तता करें तो वेदों के अपौरूषेयत्व की रक्षा क्या मुसलमान करने आवेंगे? सनातनी जनता के लिए कलंक की बात है कि ऐसे नास्तिक पण्डितों की वह कद्र करती है। जिनकी शक्ल देखना भी उसे पाप समझना चाहिए।

वेदों के हजारों मंत्रों में लाखों शब्दों का प्रयोग हुआ है जिसका अर्थ व्याकरण की रीति से निरुक्तादि की शैली से किया जाता है। वेद ईश्वरीय ज्ञान के भंडार हैं तथा आदि सृष्टि में मनुष्यों को मिलने से उनमें व्यक्ति इतिहास या किसी भी स्थान का वर्णन नहीं है। पर दीवाने लोगों को यदि किसी भी नाम का शब्द वेद के किसी पद से मिलता जुलता भी दीखने लगता है, तो वह बकने लगता है कि वेद में अमुक व्यक्ति का वर्णन आया है। ईसाई, इमाम, कबीर, राधा, लक्ष्मी, रावण, राम, मदीना आदि नाम वेदों में इसी प्रकार अंधे लोग ढूँढा करते हैं।

वेदों में राधा-कृष्ण का विपक्षी प्रमाण

"इन्द्र वयुमनिराधं हवामहे" (अथर्व वेद १९-१५-२) इसमें अनुराधम् पद में इस अंधे को राधा दीख पड़ी हैं। सत्यार्थ यह है देखिये -

(वयम्) हम लोग (आराधम्) आराधना करने योग्य या सिद्ध कराने हारे (इन्द्रम्) ऐश्वर्यशाली परमेश्वर की (हवामहे) स्तुति करते हैं। वेद

मंत्रों में राधा या कृष्ण की गंध भी नहीं है पर फिर भी इन सनातनी पाखंडी पण्डितों को वेद में राधा कृष्ण नजर आ रहे हैं।

इस प्रकार हमने दिखाया कि श्रीकृष्ण जी महाराज को पुराणों ने कल्पित कथाओं द्वारा हर प्रकार से बदनाम करने का प्रयास किया है। राधा से नाजायज संबंध कुब्जा से व्यभिचार गोपियों से विषय भोग एवं काम क्रीड़ा करना आदि झूठी लज्जा जनक बातें हैं। कीर्तन प्रणाली जिसका कि सनातनियों में काफी प्रचार हो रहा है। महान कृष्ण को बदनाम करने की दृष्टि से अत्यधिक मूर्खता पूर्ण चीज है।

हमारे पिछले लेख से स्पष्ट हो चुका है कि राधा रमण श्री गोविन्द जै जै का अर्थ राधा से व्यभिचार करने वाले कृष्ण की जै होगा। राधे कृष्ण का अर्थ होगा राधा कृष्ण के नाजायज ताल्लुक का ढोल पीटना। माधवाचार्य ने राम का अर्थ 'विषयानन्दी' किया है। तो हरे राम हरे कृष्णा का अर्थ होगा हे विषयानन्दी कृष्णा। गोपी बल्लभ राधेश्याम का अर्थ होगा हे गोपियों (ग्वालिनों) से विषय भोग, व्यभिचार करने वाले व राधा के नाजायज प्रेमी कृष्ण। इस प्रकार वर्तमान संपूर्ण कीर्तन का अर्थ होगा-गोपियों से व राधा से व्यभिचार करने वाले विषयानन्दी कृष्ण की जै हो। यह कीर्तन हुआ, या अपने पुरखा श्री कृष्ण जी को पानी पी पीकर ढोल मजीरे बजाकर मजमा लगा कर गालियाँ देना हुआ ? इन सनातनियों की कैसी अक्ल मारी गई है कि वह पुराणों की शराब के नशे में निष्कंलक पवित्रात्मा कृष्ण को दिन रात चीख-२ कर गालियाँ दिया करते हैं। व्यभिचार को ये अज्ञानी ब्रह्मचर्य मानते हैं। पुराणों की व्यभिचारिणी राधा को ये आजन्म ब्रह्मचारी बनाते हैं, कृष्ण को ये आजन्म ब्रह्मचारी बताते हैं, कृष्ण के कुब्जा से खुले व्यभिचार को यह उसकी डाक्टरी करके कमर सीधी करने का इलाज मानते हैं, गोपियों से हरामखोरी (विषयभोग) करने को पवित्र प्रेम का प्रतीक मानते

हैं जमुना में स्नान करती हुई गोपियों के वस्त्र चुराने व उनके गुप्तांगों के नग्न दर्शन करने, उनसे छल व मजाक करने को यह उनको पवित्र उपदेश देना बताते हैं। संसार के सारे दुराचारों की जड़, इस सनातन धर्म में मिट्टी का तेल डालकर आग लगा देनी चाहिए। घासलेटी पुराणों को किसी नदी या पोखर में जल प्रवाह कर देना चाहिए राम कृष्ण जैसे आर्य जाति के हमारे महापुरूषों को कंलकित करने वाले, उनको गालियाँ देने वाले इन कीर्तन पंथियों को तर्क शास्त्र का संबल लेकर ठीक करना चाहिए और जोर देकर उनको मजबूर करना चाहिए कि कृष्ण को बदनाम करने से बाज आयें। उनकी इन हरकतों से हिन्दु जाति का घोर अपमान हुआ है। ऐसे पाखंडी सनातनी पोप पंडितों की शक्ल देखना भी पाप समझना चाहिए जो पुराणों का व कीर्तन का प्रचार करके भोली भाली हिन्दु जाति में अधर्म का प्रचार करते हैं यह हमारा सभी समझदार पाठकों से निवेदन है, क्योंकि जब तक इन धर्म के ठेकेदार उपदेशकों की अक्ल दुरुस्त नहीं की जावेगी यह जनता को गलत मार्ग पर डालने से बाज नहीं आवेंगे इसलिए आर्य समाजियों व प्रत्येक समझदार पौराणिक बंधुओं को जनता में से इन धार्मिक दोषों के निवारण का प्रयत्न करते रहना चाहिए।

।। इतिशम् ।।

नोट :-

श्री आचार्य डा० श्रीराम आर्य जी का समस्त खंडन-मंडन विषयक साहित्य अब "अमर स्वामी प्रकाशन विभाग", १०५८, विवेकानन्द नगर, गाजियाबाद, से प्रकाशित किया जावेगा। पाठकवृन्द अब यहां पर संपर्क करे।

"प्रकाशक"

हमारे द्वारा प्रकाशित ट्रैक्ट साहित्य

क्रमांक	पुस्तक का नाम	मूल्य
	डा0 श्रीराम आर्य कृतः-	
१.	कुरान की विचारणीय बातें	३.००
२.	अण्ड़ा और मांस मे विष	१.००
३.	खुदा का रोज़नामचा	३.००
४.	ईसामसीह मुक्तिदाता नही था	१.००
५.	खुदा और शैतान	३.००
६.	मूर्ति पूजा पर ३१ प्रश्न	१.००
७.	मृतक श्राद्ध पर २१ प्रश्न	१.००
८.	संसार के पौराणिकविद्वानों से ३१ प्रश्न	२.००
९.	अवतारवाद पर २१ प्रश्न	१.००
१०.	ईसाई मत का पोलखाता	२.००
११.	ब्रह्माकुमारी मत खण्डन	६.००
१२.	शिवाजी के चार विलक्षण बेटे	६.००
१३.	राधास्वामी पाखण्ड खण्ड़न	६.००
१४.	गीता पर ४२ प्रश्न	६.००
१५.	हंसामत का पोलखाता	३.००
१६.	चोटी	१.००
१७.	जनेऊ	२.००
१८.	तम्बाकू (सिगरेट-बीड़ी)	१.००

नोटः विस्तृत जानकारी हेतु सूची पत्र मंगवायें !

"प्रबन्धक" अमर स्वामी प्रकाशन विभाग-गाजि0